यहोशू की पुस्तक

अध्याय 3

गोत्रों को उनका भाग दिया जाना

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....1
आरंभिक सीमाएँ....2
संरचना और विषय-वस्तु....2
यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र की सीमाएँ....3
यरदन के पूर्वी ओर के क्षेत्र की सीमाएँ....3
मूल अर्थ....3
ईश्वरीय अधिकार....4
परमेश्वर की वाचा....4
मूसा की व्यवस्था का स्तर....5
परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य....5
सारा इस्राएल....5
निश्चित बँटवारा....6
संरचना और विषय-वस्तु....6
आरंभिक सारांश....7
अंतिम सारांश....7
यहूदा....8
एप्रैम और मनश्शे....8
छोटे गोत्र....9
लेवी....9
मूल अर्थ....10
ईश्वरीय अधिकार....10
परमेश्वर की वाचा....10
मूसा की व्यवस्था का स्तर....11
परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य....11
सारा इस्राएल....12
राष्ट्रीय एकता....13
संरचना और विषय-वस्तु....13
वेदी का निर्माण....13
युद्ध का खतरा....13
भेंट....14
खतरे की समाप्ति....14
वेदी का नामकरण....14
मूल अर्थ....14
ईश्वरीय अधिकार....15
परमेश्वर की वाचा....15
मूसा की व्यवस्था का स्तर....15
परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य....16

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सारा इस्राएल 16
मसीही अनुप्रयोग 16
उद्घाटन 17
निरंतरता 19
पूर्णता 19
उपसंहार 20

परिचय

जब एक बड़े व्यवसाय का मुखिया बूढ़ा हो गया, तो उसने निश्चित किया कि अब समय हो गया था कि उसके पाँच बेटे उस व्यवसाय को संभालें। तो पिता ने अपने बेटों को मुख्य कार्यालय में बुलाया और उनमें से प्रत्येक को कंपनी में कानूनी हिस्सेदारी, अर्थात् शेयर सौंप दिए और उन्हें पंक्ति में रख दिया। उन्होंने कहा "तुम में से प्रत्येक अब व्यवसाय के किसी न किसी हिस्से के मालिक हो। और तुम सबको अपने स्थान लेने होंगे और इस प्रकार साथ काम करना होगा जैसा पहले कभी नहीं किया।"

कई रूपों में, यहोशू ने जब वह बूढ़ा हो गया था तो इस्राएल के गोत्रों के साथ लगभग ऐसा ही किया था। वह जान गया था कि अब समय हो गया था कि वे उसके बिना ही आगे बढ़ें। अतः उसने प्रत्येक गोत्र को प्रतिज्ञा की भूमि में उनका भाग प्रदान किया और उनसे इस प्रकार एक साथ कार्य करने के लिए कहा जैसा उन्होंने पहले कभी नहीं किया था।

यह यहोशू की पुस्तक पर आधारित हमारी श्रृंखला का तीसरा अध्याय है और इस अध्याय में हम इस्राएल के "गोत्रों को उनका भाग दिए जाने" पर चर्चा करेंगे। हम देखेंगे कि कैसे यहोशू की पुस्तक के दूसरे मुख्य विभाजन ने इस्राएल के लोगों को प्रतिज्ञा के देश के उत्तराधिकारियों के रूप में एक साथ कार्य करने के लिए बुलाया।

पहले के एक अध्याय में हमने यहोशू की पुस्तक के मूल अर्थ को इस रीति से सारगर्भित किया था :

> यहोशू की पुस्तक यहोशू के समय में इस्राएल की जयवंत विजय, गोत्रों को उनका भाग देने और वाचाई विश्वासयोग्यता के विषय में लिखी गई थी ताकि बाद की पीढ़ियों के सामने आने वाली ऐसी ही चुनौतियों को संबोधित किया जा सके।

यहोशू के समय के समान मूल श्रोताओं ने अपने गोत्र-संबंधी भाग की सुरक्षा करते हुए और परमेश्वर के प्रति वाचाई विश्वासयोग्यता को नया बनाते हुए अपने शत्रुओं को हराने की चुनौतियों का सामना किया। अतः हमारे लेखक ने अपनी पुस्तक को इसलिए लिखा कि वह अपने मूल पाठकों का इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में मार्गदर्शन कर सके।

इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमारी पुस्तक तीन मुख्य विभाजनों में विभाजित होती है। अध्याय 1–12 में इस्राएल की जयवंत विजयें, अध्याय 13–22 में गोत्र-संबंधी भाग, अध्याय 23, 24 में इस्राएल की वाचाई विश्वासयोग्यता। इस अध्याय में हम अपनी पुस्तक के दूसरे मुख्य विभाजन, इस्राएल को दिया गया उनका गोत्र-संबंधी भाग, को जाँचेंगे।

मोटे तौर पर, यहोशू की पुस्तक के इस विभाजन में तीन मुख्य चरण पाए जाते हैं। यह 13:1-14 में इस्राएल के भाग की आरंभिक सीमाओं से आरंभ होता है। फिर यह 13:15–21:45 में इस्राएल के प्रत्येक गोत्र को दिए गए भाग के निश्चित आवंटन की ओर आगे बढ़ता है। और यह एक ऐसे विवरण के साथ समाप्त होता है जो 22:1-34 में यहोशू के समय में इस्राएल की राष्ट्रीय एकता पर ध्यान केंद्रित करता है।

इस रूपरेखा का अनुसरण करते हुए हम इन तीनों चरणों पर ध्यान देने के द्वारा इस्राएल के गोत्र-संबंधी भाग की खोज करेंगे। इसके बाद हम हमारी पुस्तक के इस भाग के मसीही अनुप्रयोग पर कुछ बातें बताते हुए समाप्त करेंगे। आइए पहले चरण के साथ आरम्भ करें : इस्राएल के भाग की आरंभिक सीमाएँ।

आरंभिक सीमाएँ

जैसा कि हमने पहले के एक अध्याय में देखा था, यहोशू का लेखक समझ गया था कि इस्राएल ने यहोशू से प्रतिज्ञा किए गए भूमि के बड़े क्षेत्रों को प्राप्त कर लिया था। और यह उत्तराधिकार पृथ्वी पर मनुष्यजाति के अधिकार करने की परमेश्वर की लगातार चलनेवाली बुलाहट का एक विशेष भाग था। परंतु जैसा कि हम अभी देखने वाले हैं, हमारे लेखक ने यह भी पहचाना कि यहोशू के समय में इस्राएल ने उस संपूर्ण देश को प्राप्त नहीं किया था जिसकी प्रतिज्ञा उनके कुलपिता अब्राहम से की गई थी। बल्कि परमेश्वर ने इस्राएल को उस क्षेत्र का एक भाग, अर्थात् उस देश के एक बड़े हिस्से को ही प्रदान किया था। परंतु हमारे लेखक के दृष्टिकोण से यह आवश्यक था कि इस्राएल की प्रत्येक पीढ़ी उस सारे देश को पहचाने और सुरक्षित रखे जो इन आरंभिक पवित्र सीमाओं के भीतर था।

हम इस्राएल की आरंभिक सीमाओं के इस विवरण के दो पहलुओं को देखेंगे। पहला, इसकी मूलभूत संरचना और विषय-वस्तु को देखेंगे, और दूसरा हम अपनी पुस्तक के इस भाग के मूल अर्थ की ओर मुड़ेंगे। आइए पहले इसकी संरचना और विषय-वस्तु की ओर मुड़ें।

संरचना और विषय-वस्तु

यहोशू की पुस्तक का यह भाग दो खंडों में विभाजित है। पहला, 13:1-7 यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र में, अर्थात् यरदन नदी के पश्चिम में कनान के देश में इस्राएल की भूमि की सीमाओं पर ध्यान केंद्रित करता है। और दूसरा, 13:8-14 यरदन के पूर्वी ओर के क्षेत्र, अर्थात् यरदन नदी की पूर्वी दिशा के क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है।

जब हम यहोशू की पुस्तक के इस भाग का अध्ययन करते हैं तो हमें इस्राएल के भाग की सीमाओं की थोड़ी सी पृष्ठभूमि को ध्यान में रखना चाहिए। उत्पत्ति 15:18-21 में परमेश्वर ने अब्राहम की संतान से एक देश की प्रतिज्ञा की जो "मिस्र के महानद" से लेकर पश्चिम तक विस्तृत होगा। यह महानद, जिसका अनुवाद "नदी" या "नाले" के रूप में भी हो सकता है, या तो नील नदी की पूर्वी शाखा था जो अब अस्तित्व में नहीं है, या फिर एल-अरीश है जो नील नदी की पूर्व दिशा में आज विद्यमान है। और उत्तर-पूर्व की ओर अब्राहम की भूमि "परात नामक बड़े नद तक" तक विस्तृत होगी। वहाँ से इस्राएल परमेश्वर की आशीषों को पृथ्वी की सीमाओं तक फैलाएगा। परंतु वास्तव में, इस्राएल के क्षेत्र दाऊद के राज्य के समय तक इन सीमाओं तक नहीं पहुँचे। यहोशू के समय में परमेश्वर ने इस्राएल को केवल एक भाग ही प्रदान किया, जो कि यरदन नदी के दोनों ओर के इन क्षेत्रों का पूर्वाभास था। परंतु जैसे कि हमारी पुस्तक दर्शाती है, इन क्षेत्रों में सुरक्षात्मक रूप से व्यवस्थित हो जाना इस्राएल के लिए एक महत्वपूर्ण पहला कदम था।

> अब्राहम से आरंभ करके, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि एक ऐसी प्रजा आएगी, और वह प्रजा पृथ्वी के लिए आशीष का कारण होगी, और महत्वपूर्ण भूमिकाओं को अदा करेगी। परंतु एक बात यह भी है कि वह उन्हें एक देश प्रदान करेगा। यह इस विषय में एक मुख्य बात है कि इस्राएली कौन थे। वे ऐसे लोग थे जो मिस्र से अंततः निकलने और कनान देश को प्राप्त करने के समय समझ गए थे कि वे इसके योग्य नहीं थे। परमेश्वर ने उनके लिए इस पृथ्वी पर एक ऐसे स्थान की व्यवस्था करने का मार्ग प्रशस्त किया था जो उन्होंने अपने प्रयासों से हासिल नहीं किया था, जिस पर उनका कोई अधिकार नहीं था, परंतु वह स्थान उसने उन्हें अपनी प्रतिज्ञा और अपनी योजना को पूरा करने के लिए दिया था।
>
> — डॉ. डगलस स्टुअर्ट

यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र की सीमाएँ

यरदन नदी के पश्चिमी ओर के क्षेत्र की सीमाओं पर आधारित पहला खंड उन क्षेत्रों की सूची पर निर्मित है जिन पर यहोशू ने अध्याय 12 में विजय प्राप्त की थी। यह 13:1 में इस तथ्य के साथ आरंभ होता है कि यहोशू "बूढ़ा और बहुत उम्र का हो गया था" और कि ऐसे "बहुत देश रह गए [थे], जो इस्राएल के अधिकार में अभी तक नहीं आए" थे। जो क्षेत्र अभी रह गए था वह पलिश्तियों के प्रांत में और कनान के उत्तरी प्रांतों में थे। पद 13:6 में परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की, "मैं इस्राएलियों के सामने से [वहाँ के निवासियों] को निकाल दूँगा।" अतः पद 7 में परमेश्वर ने यहोशू को आगे बढ़ने तथा कनान के साथ इस्राएल के भाग के रूप में व्यवहार करने की आज्ञा दी।

यरदन के पूर्वी ओर के क्षेत्र की सीमाएँ

पद 13:8-14 में पाए जानेवाले दूसरे खंड में हमारे लेखक ने यरदन के पार के क्षेत्र की सीमाओं, अर्थात् यरदन नदी के पूर्वी क्षेत्रों का वर्णन करने के द्वारा इस्राएल के आरंभिक उत्तराधिकार के अपने रेखाचित्र को पूरा किया। हमारे लेखक ने पद 13:8 में इस बात के साथ आरंभ किया कि मूसा ने मरने से पहले इन क्षेत्रों को इस्राएल के उत्तराधिकार के रूप में दे दिया था।

यरदन के पूर्व में इस्राएल के आरंभिक गोत्र-संबंधी भाग दक्षिण में मोआब तक और उत्तर में हर्मोन पर्वत तक पहुँचे। परंतु लेखक ने पद 13:13 में ध्यान दिया कि इस्राएलियों ने ऐसे कुछ समूहों को अभी तक बाहर नहीं खदेड़ा था, जैसे "गशूरियों और माकियों।" फिर भी मूसा ने यहोशू के समय तक संपूर्ण क्षेत्र को इस्राएल के भाग के रूप में घोषित कर दिया था। और अधिक से अधिक व्यापक होने के लिए हमारे लेखक ने पद 13:14 में एक प्राथमिक वाक्य को जोड़ा। उसने स्पष्ट किया कि लेवियों ने एक भाग प्राप्त किया परंतु उनका भाग भूमि की अपेक्षा "उसी के हव्य" थे।

> यहोशू की पुस्तक में भूगोल का प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है, और देश की सीमाएँ एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है, विशेषकर पर्वतों से संबंधित... और जो वे करते हैं, वे एक ऐसी सीमा की रचना करते हैं कि पवित्र देश की सीमा क्या होगी, और यदि आप ऐसा करते हैं तो यह एक सूचक, चिह्न बन जाता है। पारंपरिक रूप से इस्राएल का उत्तरी हिस्सा हर्मोन पर्वत है, और फिर इस्राएल की पूर्वी सीमाएँ पहाड़ों के द्वारा रची गई हैं, और इसके बाद मोआब के ऊँचे क्षेत्र हैं, पहाड़ हैं, पठार हैं, मोआब और बाशान का पहाड़ी देश है। अतः वर्तमान यरदन के चारों ओर — उत्तरी यरदन से लेकर दक्षिणी यरदन तक — जो है वह उस देश की पूर्वी सीमाओं का वर्णन करता है।
>
> — डॉ. टॉम पेटर

इस्राएल के भाग की आरंभिक सीमाओं की संरचना और विषय-वस्तु को ध्यान में रखते हुए हम अब इस स्थिति में हैं कि इन पदों के मूल अर्थ के विषय में प्रश्न पूछें। हमारे लेखक ने इतिहास के इस चरण में इस्राएल के भाग के रेखाचित्र के साथ अपनी पुस्तक के इस विभाजन को क्यों शुरू किया?

मूल अर्थ

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हमें यह याद रखना होगा कि न्यायियों, राजतंत्र और बेबीलोनी निर्वासन के समय में इस्राएल ने उन क्षेत्रों पर अधिकार पाने और नियंत्रण बनाए रखने में संघर्ष किया जो परमेश्वर ने उन्हें दिए थे। इस्राएल के गोत्रों के बीच संघर्ष, इन क्षेत्रों के अन्य लोगों के द्वारा उत्पन्न की गई

मुश्किलों, रेगिस्तानी गोत्रों की ओर से आक्रमणों, और फिर अंत में मिस्र, अश्शूर और बेबीलोन जैसे बड़े साम्राज्यों के द्वारा किए गए विनाशकारी हमलों ने बार-बार उस क्षेत्र पर इस्राएल के नियंत्रण को कमजोर किया जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम से की थी।

पाठकों को इन क्षेत्रों की सीमा के बारे में याद दिलाने के द्वारा हमारे लेखक ने दर्शाया कि उनके लिए इन क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित करना कितना महत्वपूर्ण है। उसके बाद ही इस्राएल और अधिक क्षेत्रों पर अधिकार करने और संसार के सब राष्ट्रों तक परमेश्वर की आशीषों को पहुँचाने की ओर आगे बढ़ सकता था।

अपने पाठकों को इस बात के विषय में आश्वस्त करने के लिए कि इस्राएल के भाग की आरंभिक सीमाओं को कभी भुलाया नहीं जाना चाहिए, हमारे लेखक ने उन पाँच विषयों को एक साथ बुना जिन्हें उसने अपनी पुस्तक के पिछले अध्यायों में भी दर्शाया था।

ईश्वरीय अधिकार

सबसे पहले, उसने दिखाया कि कैसे ईश्वरीय अधिकार ने इस्राएल के भाग को स्थापित किया था। उसने पद 13:1 में इन शब्दों के साथ यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र पर ध्यान देना शुरू किया : "यहोवा ने [यहोशू] से कहा।" और 13:6 में उसने दर्शाया कि परमेश्वर ने यहोशू से कहा, "मेरी आज्ञा के अनुसार... देश इस्राएल को बाँट दे।" यही नहीं, ईश्वरीय अधिकार ने यरदन के पूर्वी ओर के इस्राएल के क्षेत्रों की सीमाओं को भी स्थापित किया। पद 13:8 में हम पढ़ते हैं कि ये वे क्षेत्र थे जो "मूसा ने उन्हें... दिए थे।"

यहोशू का लेखक जानता था कि इस्राएल के लिए इन क्षेत्रों के केवल एक भाग को प्राप्त करके ही बस जाना कितना आसान था। इसलिए उसने स्पष्ट किया कि यदि बाद की पीढियों ने इन सारे क्षेत्रों पर अधिकार करने के प्रति अपने समर्पण को खो दिया तो वे परमेश्वर के अधिकार और उसके आधिकारिक मानवीय प्रतिनिधियों के विरुद्ध खड़े होंगे।

परमेश्वर की वाचा

दूसरा, यहोशू की पुस्तक के लेखक ने ध्यान दिया कि इस्राएल के क्षेत्रों की आरंभिक सीमाएँ इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा के द्वारा सुरक्षित थीं। यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र के विषय में परमेश्वर ने पद 13:6 में स्पष्ट किया कि सारा कनान एक "भाग" या इब्रानी भाषा में "नकालाह" (*נַחֲלָה*) के रूप में इस्राएल का था। जैसा कि हमने पिछले अध्यायों में देखा था, इन क्षेत्रों को इस्राएल का भाग इसलिए कहा जाता था क्योंकि अब्राहम के साथ अपनी वाचा में परमेश्वर ने इस्राएल के लिए एक चिरस्थाई संपत्ति की प्रतिज्ञा की थी। और परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर मूसा के साथ अपनी वाचा में इस प्रतिज्ञा की पुष्टि की। लगभग इसी प्रकार 13:8 में यरदन के पूर्वी ओर के क्षेत्र को इस्राएल का भाग कहा जाता है।

इस रीति से परमेश्वर की वाचा की ओर ध्यान आकर्षित करने के द्वारा हमारे लेखक का संदेश अचूक था। इस्राएल की हर पीढ़ी को स्वीकार करना चाहिए कि इन क्षेत्रों पर इस्राएल का अधिकार और नियंत्रण उनके पूर्वजों के साथ परमेश्वर की पवित्र वाचा के द्वारा स्थापित किया गया था।

> उत्पत्ति की पुस्तक में जब परमेश्वर ने अब्राहम के साथ वाचाई संबंध को स्थापित किया तो उसने वास्तव में उससे चार बातों की प्रतिज्ञा की। उसने उससे बहुत से वंशजों की प्रतिज्ञा की — उनकी संख्या आकाश के तारों, और समुद्र के किनारे की बालू के समान होगी। उसने उनसे प्रतिज्ञा की कि वह उनकी रक्षा करेगा — कि वह उनका परमेश्वर होगा, कि वह उनके साथ रहेगा, कि वह उन्हें समृद्ध करेगा। उसने यह प्रतिज्ञा भी की कि वे सब राष्ट्रों के लिए आशीष बनेंगे, यह एक मसीहा-संबंधी प्रतिज्ञा थी कि मसीहा यहूदी, अर्थात् इब्रानी लोगों में से आएगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> परंतु चौथी, उसने प्रतिज्ञा की कि पुराने नियम में परमेश्वर के लोग एक देश, अर्थात् कनान के देश को प्राप्त करेंगे... यह न केवल इस्राएल के लोगों के लिए एक सामान्य प्रतिज्ञा थी, बल्कि गोत्रों के लिए भी एक निश्चित प्रतिज्ञा थी कि परमेश्वर के घराने में उनमें से प्रत्येक एक विशेष भाग को प्राप्त करेगा।
>
> — रेव्ह. केविन लेबी

मूसा की व्यवस्था का स्तर

तीसरा, इस्राएल की आरंभिक सीमाओं के विवरण ने इस बात पर भी बल दिया कि वे मूसा की व्यवस्था के अनुरूप थे। उदाहरण के तौर पर यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र के खंड के आरंभ में परमेश्वर ने 13:1 में कहा, "बहुत देश रह गए हैं, जो इस्राएल के अधिकार में अभी तक नहीं आए।" यह कोई नया प्रकाशन नहीं था। यह उन क्षेत्रों पर आधारित था जिन्हें अधिकार में लेने के लिए मूसा ने व्यवस्थाविवरण 20:16,17 जैसे अनुच्छेदों में इस्राएल को निर्देश दिए थे। लगभग इसी रूप में जब बात यरदन के पूर्वी ओर के क्षेत्र की आती है तो 13:8 उनके उस भाग के बारे में बताता है जो मूसा ने उन्हें दिया था। मूसा की व्यवस्था ने गिनती 32:33-42 और व्यवस्थाविवरण 3:8-17 जैसे अनुच्छेदों में यरदन के पार के इन क्षेत्रों का अधिकार प्रदान किया।

यहोशू के लेखक ने अपने हरेक उस पाठक को संबोधित करने के लिए मूसा की व्यवस्था की ओर ध्यान आकर्षित किया जिसने इस्राएल के आरंभिक गोत्र-संबंधी भागों पर अधिकार करने की उनकी आवश्यकता पर सवाल उठाया। स्वयं मूसा ने इस्राएल को आज्ञा दी थी कि वे इन क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करें।

परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य

चौथा, जब हमारे लेखक ने इस्राएल के क्षेत्र की आरंभिक सीमाओं के बारे में बात की तो उसने परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य की ओर भी ध्यान आकर्षित किया। यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र के खंड में परमेश्वर ने 13:6 में कहा, "[बचे हुए कनानियों को] मैं इस्राएलियों के सामने से निकाल दूँगा।" और यरदन के पूर्वी ओर के खंड के विषय में बात करते हुए उसने ध्यान दिया कि इन क्षेत्रों पर अधिकार करना उन अलौकिक विजयों के कारण संभव हुआ जो परमेश्वर ने मूसा को प्रदान किया था। पद 13:10 में उसने "एमोरियों के राजा सीहोन" पर जानी-पहचानी चमत्कारिक विजय का उल्लेख किया। और पद 12 में उसने बाशान के ओग पर पाई चमत्कारिक विजय प्राप्त की।

इन दोनों खंडों ने मूल पाठकों को दर्शाया कि उन्हें अपनी आशा उनके लिए कार्य करनेवाले ईश्वरीय हस्तक्षेप में लगानी चाहिए। केवल तभी वे यथार्थवादी रूप में यरदन के पश्चिमी ओर तथा यरदन के पूर्वी ओर के अपने भाग को प्राप्त करने तथा उस पर नियंत्रण बनाए रखने की आशा रख सकते हैं।

सारा इस्राएल

पाँचवाँ, इस्राएल की आरंभिक सीमाओं के विवरण ने सारे इस्राएल की सहभागिता पर ध्यान केंद्रित किया। यहोशू 13:7 दर्शाता है कि यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र को "नौ गोत्रों और मनश्शे के आधे गोत्र" के बीच विभाजित किया जाना था। यहोशू 13:8 उल्लेख करता है कि यरदन के पूर्वी ओर का क्षेत्र मनश्शे के आधे गोत्र, "रूबेनियों और गादियों" का भाग था। संपूर्ण इस्राएल के विषय को प्रदर्शित करने के लिए पद 13:14 लेवी के गोत्र के विशेष भाग का उल्लेख भी करता है।

जैसा कि उसने बार-बार बल दिया, हमारे लेखक ने मूल पाठकों के समक्ष स्पष्ट किया कि इस्राएल के गोत्रों को संगठित होकर रहना चाहिए। परमेश्वर के लोगों को यरदन के दोनों ओर सारी आरंभिक सीमाओं में अपनी उपस्थिति को स्थापित करने के लिए एकता में रहना आवश्यक था।

इस्राएल के गोत्र-संबंधी भागों की आरंभिक सीमाओं का अध्ययन करने के बाद अब हमें इस अध्याय के अपने दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ना चाहिए : प्रत्येक गोत्र को उनके भागों का निश्चित बँटवारा। ये क्षेत्र कैसे बाँटे गए?

निश्चित बँटवारा

अपनी पुस्तक के इस भाग में हमारा लेखक इस्राएल की सीमाओं को पहचानने से आगे बढ़ा और उसने प्रत्येक गोत्र को प्रदान किए गए निश्चित भागों पर ध्यान केंद्रित किया। जैसा कि हम देखने वाले हैं, ये आवंटन समस्या से भरे हुए थे क्योंकि कुछ गोत्रों को दूसरे गोत्रों से बड़ा और बेहतर भाग मिला था। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि न्यायियों, शमूएल और राजाओं की पुस्तकें हमें बताती हैं कि इस असंतुलन के कारण कई प्रकार के अविश्वास, दुर्व्यवहार, फूट और यहाँ तक कि गोत्रों के बीच युद्ध तक की परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं। मूल पाठकों की इस प्रकार की समस्याओं से निपटने में सहायता करने के लिए हमारे लेखक ने उन्हें उत्साहित किया कि वे उस निश्चित गोत्र-संबंधी बँटवारे का आदर करें जिसे परमेश्वर ने यहोशू के समय में स्थापित किया था।

हम इस्राएल के भाग के निश्चित बँटवारे के अपने लेखक के प्रस्तुतिकरण को अपने सामान्य तरीके से देखेंगे। पहला, हम इसकी मूल संरचना और विषय-वस्तु की जाँचेंगे, और दूसरा, हम इसके मूल अर्थ को खोजेंगे। आइए पहले हम यहोशू की पुस्तक के इस भाग की संरचना और विषय-वस्तु की ओर मुड़ें।

संरचना और विषय-वस्तु

पद 13:15–21:45 में इस्राएल के गोत्र-संबंधी निश्चित बँटवारे का विवरण भ्रामक हो सकता है। इसमें लोगों, क्षेत्रों, नगरों, शहरों, और गाँवों की लंबी सूची पाई जाती है, जिनके बीच में कई संक्षिप्त कहानियाँ और त्वरित विवरण आते हैं। इस सारी विविधता में मुख्य विचारों को समझ लेना यह समझने में हमारी सहायता करता है कि यह दो भागों में विभाजित होता है : 13:15-33 में यरदन के पूर्वी ओर के क्षेत्र में मूसा द्वारा निर्देशित गोत्र-संबंधी बंटवारा, और 14:1–21:45 में यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र में यहोशू द्वारा निर्देशित गोत्र-संबंधी बंटवारे का और अधिक विस्तृत विवरण।

यरदन के पूर्वी ओर के क्षेत्र में गोत्र-संबंधी बंटवारे का विवरण अपेक्षाकृत छोटा है। यह 13:15-23 में रूबेन के गोत्र के साथ आरंभ होता है। पद 24-28 में गाद का गोत्र प्रकट होता है। और पद 29-31 में यरदन के पूर्वी ओर के क्षेत्र में मनश्शे के आधे गोत्र के बंटवारे का वर्णन पाया जाता है। फिर हमारे लेखक ने पद 32, 33 में लेवी के गोत्र के विशेष भाग का उल्लेख करते हुए इस खंड को समाप्त किया, जैसा उसने पिछले खंड को भी समाप्त किया था।

> क्योंकि लेवी के गोत्र को ऐसे गोत्र के रूप में चुना गया था जिसने पूरे इस्राएल राष्ट्र के लिए याजक होने की सेवा को निभाया और पूरा किया, इसलिए उस गोत्र को भूमि का कोई भाग नहीं दिया गया। यहोशू 13 में यह कहा गया है कि परमेश्वर उनका भाग था। इस कारण, लेवी के गोत्र को इस्राएल के बारह गोत्रों के बीच हुए बंटवारे से बाहर रखा गया, और जो भाग लेवी के गोत्र को मिला वह इस्राएलियों

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> द्वारा चढ़ाई जानेवाली भेंटें थी — अर्थात् वे दान और दशमांश जो पूरे इस्राएल राष्ट्र द्वारा दिए जाते थे।
>
> — रेव्ह. हेनरिक तुर्कानिक, अनुवाद

इन पदों में यहोशू की पुस्तक के लेखक ने बड़ी सावधानी के साथ उन क्षेत्रों को चित्रित किया जिन्हें यरदन के पूर्वी ओर रूबेन, गाद और मनश्शे के आधे गोत्र को दिया गया था। बड़े स्तर के दृष्टिकोण से देखें तो यह बंटवारा बहुत स्पष्ट प्रतीत होता है, परंतु इन गोत्रों के लिए ये विभाजन इतने भी स्पष्ट नहीं थे। परस्पर-व्याप्त क्षेत्रों और सीमाओं पर आधारित असहमतियों ने हमारे लेखक को विवश किया कि वह विस्तृत रूप से बताए कि निश्चित क्षेत्र, यहाँ तक कि नगर और गाँव किसके हिस्से में आए थे।

> जब आधुनिक मसीही यहोशू की पुस्तक में अध्याय 13–22 को पढ़ते हैं, तो वे कुछ ऐसी बात का सामना करते हैं जो हमारी कल्पना को आकर्षित नहीं करता, और वह बात यह है, इस गोत्र या उस गोत्र के क्षेत्रों की सीमाओं, और इस गोत्र के पास ये नगर और उस गोत्र के पास वे नगर थे, आदि की लंबी सूचियाँ। वास्तव में, कई बार जब लोग इन्हें आधुनिक लोगों के रूप में पढ़ते हैं तो वे इसे देखकर यह कहते हैं, “इसका धर्म के साथ क्या संबंध है?” या “इसका विश्वास के साथ क्या लेना-देना है?” परंतु यहोशू की पुस्तक के मूल संदर्भ में अलग-अलग गोत्रों और संगठित लोगों के रूप में इसका इस्राएल के विश्वास और परमेश्वर के साथ उनके संबंध के विषय में बहुत महत्व था, क्योंकि हमें यह याद रखना है कि परमेश्वर ने एक राजा के रूप में संसार में उन स्थानों को विभाजित या आवंटित किया था जहाँ सारे बारह गोत्रों को बसना था। यह उनका स्थाई भाग होना था, कुछ ऐसा जिसे उन्हें थामे रखना था, और वह स्थान उनकी मातृभूमि , अर्थात् पूरे इस्राएल राष्ट्र में उनकी मातृभूमि बनना था।
>
> — डॉ. रिर्चड, एल. प्रैट, जूनियर

इसके बाद हमारे लेखक ने यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र में यहोशू द्वारा किए गए निश्चित गोत्र-संबंधी बंटवारे का एक बहुत बड़ा विवरण प्रस्तुत किया। ये विवरण छः मुख्य खंडों में विभाजित होते हैं।

आरंभिक सारांश

ये यहोशू के कार्यों और कैसे उन्होंने यरदन के पूर्वी ओर के क्षेत्र में मूसा के पहले से किए कार्य को प्रकट किया के संक्षिप्त आरंभिक सारांश के साथ 14:1-5 में आरंभ होते हैं। यह खंड एक से अधिक बार यह भी दर्शाता है कि यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र में यहोशू के बंटवारे के कार्य परमेश्वर की इच्छा के अनुसार थे।

अंतिम सारांश

पहले भाग के शेष भाग में यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र के बंटवारे का विवरण 21:43-45 में अंतिम सारांश के साथ समाप्त होता है। हमारे लेखक ने 21:43 में स्पष्ट किया कि सारे गोत्र “[उस देश के] अधिकारी होकर उसमें बस गए।” और अपने पाठकों को यह दर्शाने के लिए कि परिस्थिति कितनी आदर्श थी, हमारे लेखक ने इस घोषणा के साथ पद 45 में इस पूरे खंड को समाप्त किया कि “जितनी भलाई की बातें यहोवा ने इस्राएल के घराने से कही थीं उनमें से कोई बात भी न छूटी; सब की सब पूरी हुई।”

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> यहोशू 13–22 में हम इस्राएल के प्रति परमेश्वर की वाचाई प्रतिज्ञाओं की पूर्णता को पाते हैं, क्योंकि उन अध्यायों में हम विभिन्न बारह गोत्रों को आवंटित भूमि के बारे में पढ़ते हैं। पद 21:45 विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि परमेश्वर की एक भी ऐसी प्रतिज्ञा नहीं जो पूरी नहीं हुई थी, यह पाठक को उसकी ओर वापस लेकर जाती है जो प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम से की थी कि वह उसे देश प्रदान करेगा, उसकी अनगिनत संतान होगी, और वह उसके लोगों के बीच उपस्थित रहेगा। और जब उस देश का पूरा बंटवारा हो जाता है, तो हम इस्राएल को उस प्रतिज्ञा के देश में विश्राम करते हुए पाते हैं जिसकी प्रतिज्ञा उत्पत्ति 12 में बहुत पहले अब्राहम से की थी।
>
> — रेव्ह. माईकल जे. ग्लोडो

यहूदा

पुस्तक के इन दो सिरों के बीच चार मुख्य खंड पाए जाते हैं। वे 14:6–15:63 में इस्राएल के प्रमुख गोत्र यहूदा के साथ आरंभ होते हैं। इन पदों के अनुसार यहूदा ने बहुत बड़े भाग को प्राप्त किया, जो दक्षिण में नेगेव और एदोम की सीमा तक था। पश्चिम में यह सीमा पलिश्तियों के देश तक पहुँची और मिस्र की खाड़ी तक भूमध्यसागर के किनारे-किनारे आगे बढ़ी। यह यरूशलेम — या "येबुस" जैसा कि इसे उस समय कहा जाता था — के थोड़ा उत्तर की ओर भूमध्यसागर के किनारे उत्तर में तथा पूर्व में मृत सागर तक पहुँची ।

यह समझनेयोग्य है कि क्यों हमारे लेखक ने सूची में सबसे पहले यहूदा के बंटवारे को रखा और यह दर्शाया कि यहूदा को कितना भाग मिला। उत्पत्ति 49:8-12 के अनुसार यहूदा को इस्राएल के राजकीय गोत्र के रूप में ठहराया गया था। हमारे लेखक ने यहूदा को दिए गए सम्मान को प्रकट किया, पहला यहूदा के मुख्य योद्धा कालेब को दिए गए क्षेत्रों के विषय में संक्षिप्त विवरण देने के द्वारा। फिर उसने यहूदा के क्षेत्र में 126 नगरों और गाँवों का नाम के साथ उल्लेख किया — यह उसके द्वारा सूचीबद्ध अन्य किसी भी गोत्र से कहीं अधिक है।

एप्रैम और मनश्शे

यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र में यहूदा के दक्षिणी बंटवारे के विवरण के बाद हम एक और लंबे विवरण को पाते हैं, अध्याय 16, 17 में यूसुफ के पुत्रों एप्रैम और मनश्शे के गोत्रों को दिए गए भागों का विवरण।

एप्रैम और मनश्शे ने कनान के उत्तरी क्षेत्रों में बड़े क्षेत्र को प्राप्त किया। उनका बंटवारा यरदन नदी से भूमध्यसागर तक विस्तृत था और मनश्शे के दक्षिण में एप्रैम था। ये क्षेत्र प्रतिज्ञा के सारे देश में सबसे अधिक उपजाऊ क्षेत्रों में से थे। इसके अतिरिक्त आपको याद होगा कि मनश्शे के आधे गोत्र को यरदन के पूर्व में पहले से ही भूमि प्रदान कर दी गई थी।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इन गोत्रों ने इस्राएल के भाग के इतने बड़े और भरपूर भाग को प्राप्त करने का सम्मान प्राप्त किया। जैसे कि उत्पत्ति 48, 49 स्पष्ट करते हैं, एप्रैम और मनश्शे यूसुफ के पुत्र थे। और यूसुफ को बहुत अधिक सम्मान मिला क्योंकि वह मिस्र में परमेश्वर के प्रति बहुत विश्वासयोग्य था। उसने रूबेन के स्थान पर याकूब के पहलौठे का अधिकार प्राप्त किया और अपने दो पुत्रों के माध्यम से पहलौठे के दोहरे भाग को प्राप्त किया।

> अतः एप्रैम और मनश्शे यूसुफ के पुत्र हैं। वे याकूब के पुत्र नहीं हैं — याकूब वह व्यक्ति था जिसका नाम बदलकर इस्राएल रखा गया — और याकूब के बारह पुत्र

> थे। उनमें से एक यूसुफ को एक दास के रूप में मिस्र में बेच दिया गया। और फिर लेवी, जिसे उस समय बारहों में नहीं गिना गया जब यहोवा ने इस्राएल के लोगों के पहलौठे के स्थान पर लेवी के गोत्र को अपने लिए लेने का निर्णय लिया... और फिर याकूब की आशीष, उसने यूसुफ के पुत्रों को आशीष दी, और उसने एप्रैम और मनश्शे को आशीष दी, और यह ऐसे था कि उन दोनों ने संख्या में लेवी और यूसुफ का स्थान ले लिया। और इस प्रकार जब उन्होंने देश का बंटवारा किया, अर्थात् बारह गोत्रों में उसे बांटा तो एप्रैम और मनश्शे दोनों को उनका भाग, अर्थात् गोत्र-संबंधी भाग मिला... और फिर, यूसुफ को उसके पुत्रों एप्रैम और मनश्शे के द्वारा प्रस्तुत किया गया।
>
> — डॉ. जेम्स एम. हैमिल्टन

अध्याय 16 यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र में यूसुफ के क्षेत्रों के एक संक्षिप्त अवलोकन के साथ आरंभ होता है, और फिर उसने एप्रैम के गोत्र के विषय में निश्चित विवरण प्रदान किए। इसके बाद अध्याय 17 में यह विवरण मनश्शे के गोत्र की ओर बढ़ता है, जिसमें गिनती 27 से सलोफाद की बेटियों के भाग की कहानी भी शामिल है। और यह खंड इस व्याख्या के साथ समाप्त होता है कि क्यों संख्या में अधिक होने के कारण एप्रैम और मनश्शे को अधिक क्षेत्र प्राप्त हुआ।

एप्रैम और मनश्शे के गोत्रों को दी गई प्रमुखता बहुत ही चकित करनेवाली है क्योंकि हमारी इस पुस्तक के लिखे जाने के समय तक इन गोत्रों ने कई तरह की समस्याओं को उत्पन्न किया। परंतु हमारे लेखक ने दर्शाया कि इस इतिहास के बावजूद भी इस्राएल को यह स्वीकार करना चाहिए कि कैसे परमेश्वर ने यूसुफ के गोत्रों को सम्मान दिया था।

छोटे गोत्र

यहूदा, एप्रैम और मनश्शे के बड़े गोत्रों को बांटे गए क्षेत्र के विषय में बात करने के बाद अध्याय 18, 19 में हमारा लेखक छोटे गोत्रों की ओर मुड़ा। उसने 18:1-10 में इस विवरण के साथ आरंभ किया कि कैसे यहोशू ने प्रत्येक गोत्र के प्रतिनिधियों को इन क्षेत्रों का सर्वेक्षण करने के लिए बुलाया। और उसने यह दर्शाते हुए इस कहानी के साथ 19:49-51 में समाप्त किया कि गोत्रों ने इन प्रबंधों को प्रमाणित किया क्योंकि उन्होंने यहोशू को उसका विशेष पारिवारिक भाग प्रदान किया।

इन आरंभिक और अंतिम विवरणों के बीच हमारे लेखक ने बिन्यामीन, शिमोन, जबूलून, इस्साकार, आशेर, नप्ताली और दान जैसे इस्राएल के छोटे गोत्रों के बंटवारे का वर्णन किया। यद्यपि इन गोत्रों ने अपने भागों को प्राप्त किया, फिर भी उन्होंने यहूदा, एप्रैम और मनश्शे जितने बड़े भागों को प्राप्त नहीं किया। और बाद के समयों में इन छोटे गोत्रों ने अपने क्षेत्रों को संभाले रखने में परेशानियों का सामना किया। हमारे लेखक ने स्वयं 19:9 में उल्लेख किया कि शिमोन का भाग वास्तव में यहूदा के "भाग के बीच ठहरा," यह वह तथ्य था जिसने अंततः शिमोन के भाग के यहूदा में जोड़े जाने की ओर प्रेरित किया। और उसने 19:47 में भी ध्यान दिया कि "दानवंशियों का भाग उनके हाथ से निकल गया" — वह कहानी जो हम न्यायियों 18 में पढ़ते हैं। यह जानते हुए कि इस प्रकार की अन्य अस्थिरताओं ने छोटे गोत्रों को परेशान किया तो हमारे लेखक ने यह निश्चित करने के लिए लिखा कि उसके पाठक इस बंटवारे को स्वीकार करें।

लेवी

अध्याय 20, 21 में यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र में यहोशू के बंटवारे में लेवी के गोत्र का विवरण भी शामिल है। यहोशू की पुस्तक के लेखक ने 20:1-9 में शरण नगरों की चर्चा करते हुए लेवी के विषय में

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

अपने विवरण को शुरू किया। निर्गमन 21:12-14 और व्यवस्थाविवरण 19:1-13 के अनुसार इन नगरों ने उनको शरण प्रदान की जिन्होंने गैरइदातन हत्याएँ की थी जब तक कि इस्राएल के न्यायालय उनके दोषी या निर्दोष होने का निर्णय न सुना दें। इसके बाद, अध्याय 21 में हमारे लेखक ने गिनती 35:6-34 में मूसा के निर्देशों का पालन करते हुए सामान्य रूप में लेवियों के नगरों की सूची प्रदान की।

शरण के नगर और लेवियों के नगर इस्राएल के देश में अन्य गोत्रों के क्षेत्रों में फैले हुए थे। इससे लेवियों के लिए यह संभव हो पाया कि वे परमेश्वर की सेवा में सब गोत्रों का मार्गदर्शन करें। दुखद रूप में, कठिनाई के समय में इन बंटवारों को आसानी से भुला दिया गया। परंतु यहोशू की पुस्तक के लेखक ने बल दिया कि उसके पाठक उन्हें याद रखें क्योंकि लेवियों की सेवा देश के कल्याण के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी।

इन निश्चित गोत्र-संबंधी बंटवारों की संरचना और विषय-वस्तु को मन में रखते हुए हमें इन अध्यायों के मूल अर्थ को संक्षिप्त रूप से सारगर्भित करना चाहिए।

मूल अर्थ

आधुनिक पाठकों को अक्सर उन भौगोलिक विवरणों को समझने में कठिनाई होती है जिन्हें यहोशू की पुस्तक के लेखक ने इन अध्यायों में शामिल किया है। परंतु उसकी बुलाहट केवल यह नहीं थी कि इस्राएल अपने आरंभिक राष्ट्रीय भाग को सुरक्षित कर ले। उसने उन्हें निश्चित स्थिति और उन भिन्नताओं को पहचानने के लिए बुलाया जिन्हें परमेश्वर ने प्रत्येक गोत्र के लिए स्थापित किया था ताकि वे परमेश्वर के राज्य के विस्तार को और अधिक बढ़ाने के लिए आगे बढ़ सकें।

अपनी सामान्य रीति में, हमारे लेखक ने अपने पांच पुनरावर्ती विषयों को इस्राएल के निश्चित गोत्र-संबंधी बंटवारों के विवरण में बुना।

ईश्वरीय अधिकार

सबसे पहले, उसने ईश्वरीय अधिकार पर बल दिया जिसने गोत्रों के बीच क्षेत्रों के विभाजन को निर्देशित किया। यरदन के पूर्वी ओर के क्षेत्र के बंटवारे के अपने विवरण में हमारे लेखक ने पद 13:8, 15, 24 और 29 में चार बार टिप्पणी की कि ये क्षेत्रों के वे विभाजन थे जिन्हें परमेश्वर के ईश्वरीय रूप से अधिकार-प्राप्त अगुवे मूसा ने उन्हें दिए थे।

हमारे लेखक ने यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र में गोत्र-संबंधी बंटवारे के पीछे ईश्वरीय अधिकार की ओर भी संकेत किया। पद 14:1 में अपने आरंभिक सारांश में उसने लिखा कि “एलीआज़ार याजक, और नून के पुत्र यहोशू, और इस्राएली गोत्रों के पूर्वजों” ने क्षेत्र के विभाजनों को स्थापित किया। उसने 17:4 में एप्रैम और मनश्शे के अपने विवरण में भी इसी बात पर बल दिया। और हम इसे 19:51 में छोटे गोत्रों के उसके विचार-विमर्श में, और 21:1 में लेवी के गोत्र के साथ उसके व्यवहार में फिर से देखते हैं।

इसके अतिरिक्त, हमारे लेखक ने 20:1 में यह कहते हुए अपनी रीतिनुसार लेवी के गोत्र के भाग का परिचय दिया, “फिर यहोवा ने यहोशू से कहा...” मूल पाठकों में से सब लोगों के लिए इसके अर्थ बिलकुल स्पष्ट थे। इन निश्चित गोत्र-संबंधी बंटवारों के प्रति असंतुष्टि ने उसके प्रति असंतोष को प्रकट किया जिसका निर्देश परमेश्वर ने दिया था।

परमेश्वर की वाचा

दूसरा, जैसे कि यहोशू की पुस्तक के लेखक ने इस्राएल के निश्चित गोत्र-संबंधी बंटवारे के बारे में चर्चा की, उसने इस बात पर भी बल दिया कि ये विभाजन परमेश्वर की वाचा पर आधारित थे। लेखक ने इब्रानी शब्द *नकालाह* (*נַחֲלָה*) का प्रयोग करते हुए बार-बार देश के उन भागों का उल्लेख किया जिन्हें गोत्रों

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

को उनके "भागों" के रूप में दिया गया था। जैसे कि हमने पहले उल्लेख किया था, यह शब्द अब्राहम और मूसा के साथ परमेश्वर की वाचाओं से गहराई से संबंधित था। पद 13:32 में उसने यरदन के पूर्वी ओर के क्षेत्र को इस्राएल के "भाग" कहा। पद 33 में उसने लेवियों के विशेष भाग को उनके "भाग" के रूप में पहचाना। पद 14:1, 2 और 3 में यरदन के पश्चिमी ओर के बंटवारे के अपने आरंभिक सारांश में उसने "भाग" शब्द का प्रयोग किया। उसने 14:9, 13, और 15:20 में यहूदा की भूमि को भी "भाग" कहा। उसने 16:4 तथा सात और बार उसने एप्रैम और मनश्शे के साथ भी ऐसा ही किया। और उसने छोटे गोत्रों के आवंटन को लगभग सत्रह बार "भाग" कहा। और पद 21:3 में लेवी के गोत्र के अपने अंतिम विवरण में उसने बताया कि कैसे प्रत्येक गोत्र ने अपने "भाग" में से लेवियों को नगर और चराइयाँ दी थीं। अंततः 21:43 में इस खंड के अपने अंत के सारांश में हमारे लेखक ने लिखा कि परमेश्वर ने इस्राएल को "इस्राएलियों को वह सारा देश दिया, जिसे उसने उनके पूर्वजों से शपथ खाकर देने को कहा था।" इन सभी पदों ने यह स्पष्ट किया कि ये निश्चित गोत्र-संबंधी बंटवारे परमेश्वर की वाचा में स्थापित थे। और यदि किसी ने उनकी उपेक्षा की, तो इसका अर्थ था कि उन्होंने परमेश्वर के लोगों के प्रति वाचाई प्रभु के रूप में उसकी पवित्र प्रतिज्ञा की उपेक्षा की।

मूसा की व्यवस्था का स्तर

तीसरा, इस्राएल के निश्चित गोत्र-संबंधी बंटवारों के अपने विवरण में यहोशू की पुस्तक के लेखक ने मूसा की व्यवस्था के स्तर की आज्ञाकारिता पर भी बल दिया। यह बल यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र के साथ उसके व्यवहार में सबसे स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। पद 14:2 में उसका आरंभिक सारांश यह दर्शाता है कि यहोशू ने वह किया "जो आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा ... दी थी।" और 14:5 इसमें जोड़ता है कि "जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी" उसके अनुसार इस्राएलियों ने देश को बाँट लिया। पद 17:4 में सलोफाद की बेटियों ने उसकी विनती की जिसकी "यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।" लेवी के गोत्र का विवरण 20:2 में उल्लेख करता है कि इस्राएल को उसका पालन करना है जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने उन्हें "मूसा के द्वारा" दी थी। और 21:2, 8 के अंत के सारांश के अनुसार "जो आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा दी थी" उसके फलस्वरूप लेवी के गोत्र को नगर दिए गए।

इन अध्यायों में मूसा की व्यवस्था के स्तर के प्रति हमारे लेखक के उल्लेख ने इस्राएल की सब पीढ़ियों को बुलाहट दी कि वे देश के इस विभाजन का पालन करें। उनका उल्लंघन परमेश्वर के लोगों पर उसके शाप को लेकर आएगा। उनका पालन करने से परमेश्वर की आशीषें प्राप्त होंगी।

परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य

चौथा, ये अध्याय यह भी मानते हैं कि इस्राएल के निश्चित गोत्र-संबंधी बंटवारों की पुष्टि परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य के द्वारा हुई। यरदन के पूर्वी ओर के क्षेत्र के बंटवारे का विवरण 13:10, 27 में राजा सीहोन की चमत्कारिक पराजय का उल्लेख करता है। और हम 13:22 में बिलाम के मारे जाने, और 13:31 में बाशान में ओग पर विजय पाने के बारे में पढ़ते हैं। इन सारी घटनाओं ने यरदन के पूर्वी ओर के क्षेत्र में परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य की याद दिलाई।

इसके अतिरिक्त, यरदन के पश्चिमी ओर के बंटवारों के विषय में लेखक का विवरण परमेश्वर के अलौकिक हस्तक्षेप को दर्शाने के लिए चिट्ठी डालने का उल्लेख करता है। जैसे कि गिनती 36:2 और नीतिवचन 16:33 जैसे अनुच्छेद स्पष्ट करते हैं, चिट्ठी डालना एक ऐसा तरीका था जिसके द्वारा परमेश्वर ने अलौकिक रूप से अपनी इच्छा इस्राएल के समक्ष प्रकट की थी। पद 14:2 में यरदन के पश्चिमी ओर का आरंभिक सारांश चिट्ठी डालने का उल्लेख करता है। और छोटे गोत्रों के बंटवारों में चिट्ठी डालना लगभग ग्यारह बार पाया जाता है। पद 21:4, 10 में इस्राएल भी लेवी के गोत्र के भाग के लिए चिट्ठी डालता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

हमारे लेखक के द्वारा परमेश्वर की अलौकिक सहभागिता के बार-बार वर्णन करने का उद्देश्य समझना कठिन नहीं है। मूल पाठकों के सदस्य शायद इन गोत्र-संबंधी बंटवारों से भटक रहे होंगे। परंतु हमारे लेखक ने बार-बार दर्शाया कि इन बंटवारों की अवहेलना नहीं की जानी चाहिए क्योंकि स्वयं परमेश्वर ने उन्हें स्थापित किया है।

> यहोशू की पुस्तक में यह रोचक बात है कि उन्होंने इस बात के लिए चिट्ठी डाली कि किसे कौनसा क्षेत्र मिले, और मेरे विचार से यह दर्शाता है कि यह परमेश्वर के हाथों में है, कि उसमें कोई पक्षपात नहीं होगा, यद्यपि यह यहोशू चुन रहा है कि किसे क्या मिलेगा, परंतु वास्तव में यह परमेश्वर है जो उन्हें वह दे रहा है। और चिट्ठी डालना इस महत्व की ओर संकेत करता है कि यह परमेश्वर और उसके लोगों के विषय में है, और परमेश्वर अपने लोगों को यह बड़ी निष्पक्षता से दे रहा है। और मेरे विचार से यहाँ इस बात को भी समझा जाना जरूरी है कि परमेश्वर इन लोगों के संपत्ति के अधिकारों को बनाए रखेगा, और उन्हें मिला हुआ भाग उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। और यह भी रोचक बात है कि यह देश कहीं जाएगा नहीं... कोई भी इस क्षेत्र को हमेशा के लिए नहीं खोएगा, और कि यदि वे अपने क्षेत्र को बेच भी देते हैं तो भी जुबली का समय आएगा जब वह क्षेत्र उन्हें लौटा दिया जाएगा। और इसलिए, यह सब इस तथ्य से जुड़ा है कि यह परमेश्वर की ओर से उनका भाग है, कि यह परमेश्वर के द्वारा दिया गया उनका अधिकार है, और परमेश्वर इन सीमाओं को सुरक्षित रख रहा है और कोई भी, यहाँ तक कि कोई राजा भी आकर यह नहीं कह सकता, "यह देश तुम्हारा नहीं है।" व्यवस्था की अवहेलना करने के द्वारा राजाओं ने ऐसा करने का प्रयास किया, परंतु वे ऐसा कर नहीं पाए क्योंकि यह परमेश्वर के लोगों के रूप में उनके लिए परमेश्वर का दान और उसकी ओर से उनका भाग था।
>
> — डॉ. टी. जे. बेट्स

सारा इस्राएल

पाँचवां, पुस्तक के आरंभिक अध्यायों के समान इस्राएल के निश्चित गोत्र-संबंधी बंटवारों पर आधारित ये अध्याय संपूर्ण इस्राएल के शामिल होने पर भी बल देते हैं। हम इस बल को उस तरीके में देख सकते हैं जिसमें यरदन के पूर्वी ओर के क्षेत्र के बंटवारों का विवरण यरदन की पूर्व दिशा में प्रत्येक गोत्र को दिए गए अलग-अलग क्षेत्रों को दर्शाता है। यरदन के पश्चिमी ओर के बंटवारों का विवरण भी ऐसा ही करता है। यह न केवल वह दर्शाता है कि यहूदा, एप्रैम और मनश्शे के गोत्रों को क्या दिया गया, बल्कि यह भी कि छोटे गोत्रों को भी क्या दिया गया। यही नहीं, यह उन नगरों का भी वर्णन करता है जो लेवी के गोत्र को दिए गए थे।

हमारे लेखक के द्वारा इस्राएल के सारे गोत्रों पर पूरे विवरण के साथ ध्यान देने ने उसके इस दृढ़ विश्वास को मजबूत किया कि संपूर्ण इस्राएल को प्रतिज्ञा के देश में बसना जरूरी है। हमारी इस पुस्तक के लिखे जाने के समय तक कुछ गोत्रों ने दूसरे गोत्रों को अपने में समा लिया था। अन्य गोत्रों ने यहाँ वहाँ अपने क्षेत्रों को शत्रुओं के हाथों खो दिया था। और अश्शूरियों द्वारा इस्राएल के उत्तरी राज्य का विनाश कर देने और बेबीलोनियों द्वारा यहूदा पर विजय प्राप्त कर लेने के समय तक परमेश्वर के कुछ बचे हुए लोग ही अपने गोत्र-संबंधी भागों में बसे हुए थे। परंतु हमारे लेखक ने एक ऐसे आदर्श पर बल दिया जिसका अनुसरण करने के प्रयास प्रत्येक इस्राएली को करना था। संपूर्ण इस्राएल को प्रतिज्ञा के देश का अपना अधिकारपूर्ण भाग रखना जरूरी था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

हम यह देख चुके हैं कि कैसे यहोशू की पुस्तक गोत्रों के भागों की आरंभिक सीमाओं और अलग-अलग गोत्रों के निश्चित बंटवारों की पुनर्समीक्षा करने के द्वारा इस्राएल के गोत्र-संबधी भागों के विषय में चर्चा करती है। आइए अब हम अपने अध्याय के तीसरे मुख्य चरण की ओर मुड़ें : इस्राएल की राष्ट्रीय एकता।

राष्ट्रीय एकता

सदियों से बार-बार इस्राएल के गोत्रों में फूट पड़ी और वे एक दूसरे के विरुद्ध हो गए। और हमारा लेखक जानता था कि इस्राएल तब तक परमेश्वर के राज्य को फैलाने में आगे नहीं बढ़ सकता जब तक सारे गोत्र मिलकर एक प्रजा के रूप में खड़े नहीं होते। इस विषय को संबोधित करने के लिए हमारे लेखक ने अपनी पुस्तक के इस विभाजन को ऐसे समय के साथ समाप्त किया जब यहोशू के समय में बड़े संघर्षो ने इस्राएल की एकता को खतरे में डाल दिया था।

जैसा कि हमने कई बार देखा है, यहोशू की पुस्तक बार-बार ऐसे प्रमुख प्राकृतिक विभाजन की ओर ध्यान खींचती है जो यरदन के पूर्वी ओर तथा पश्चिमी ओर के इस्राएल के गोत्रों के बीच पाया जाता था। यहोशू के समय में भौगोलिक विभाजन समस्या खड़ी करनेवाला था क्योंकि इसने यरदन के दोनों ओर के गोत्रों के बीच लगभग युद्ध होने की स्थिति उत्पन्न कर दी थी। अतः जब हमारे लेखक ने इस्राएल के गोत्र-संबंधी भागों पर आधारित दूसरे विभाजन को समाप्त किया, तो उसने याद किया कि कैसे यहोशू ने यरदन के पूर्वी ओर तथा पश्चिमी ओर के गोत्रों को संगठित रहने के लिए प्रेरित किया। इन घटनाओं ने दर्शाया कि कैसे उसके मूल पाठकों को अपने समय में ऐसी ही समस्याओं का समाधान करना चाहिए।

जब हम इस्राएल की राष्ट्रीय एकता का अध्ययन करते हैं तो हम पहले इस खंड की संरचना और विषय-वस्तु, और फिर इसके मूल अर्थ को देखने के द्वारा उसी प्रारूप का अनुसरण करेंगे। आइए पहले हम इस अध्याय की संरचना और विषय-वस्तु पर ध्यान दें।

संरचना और विषय-वस्तु

अध्याय 22 में इस्राएल की राष्ट्रीय एकता का विवरण एक सीधा विवरण है जो पांच चरणों में प्रकट होता है। यह पद 1-10 में यरदन के पूर्वी ओर के गोत्रों के द्वारा एक वेदी बनाने की नाटकीय समस्या के साथ शुरू होता है।

वेदी का निर्माण

यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र में इस्राएल की विजयों के बाद यहोशू ने रूबेन, गाद और मनश्शे के आधे गोत्र को यरदन के पूर्व दिशा के उनके भागों की ओर वापस भेजा। उसने उन्हें परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने की चेतावनी दी। जब वे यात्रा में आगे बढ़े, तो यरदन के पूर्वी ओर के गोत्रों ने यरदन नदी के निकट एक बड़ी और भव्य वेदी बनाई। जब यरदन के पश्चिमी ओर के गोत्रों ने इसके बारे में सुना तो उन्हें लगा कि मूसा के मिलापवाले तंबू की यहोवा की वेदी के बदले उस वेदी को बनाया गया था।

युद्ध का खतरा

पद 11-14 में युद्ध के खतरे के बढ़ने के साथ विवरण में समस्या की बढ़ोतरी हो जाती है। इस बात से भयभीत होकर कि यरदन के पूर्वी ओर के गोत्रों द्वारा स्थापित वेदी संपूर्ण इस्राएल पर परमेश्वर के क्रोध

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

को लेकर आएगी, यरदन के पश्चिमी ओर के गोत्रों ने आक्रमण करने की योजना बनाई। परंतु युद्ध की संभवना को दूर करने के प्रयास में उन्होंने पहले एलीआज़ार के पुत्र पीनहास और दस मुख्य पुरुषों के प्रतिनिधि मंडल को यरदन के पूर्वी ओर के गोत्रों से भेंट करने के लिए भेजा।

भेंट

पद 15-31 में हमारी कहानी का लंबा निर्णायक मोड़ प्रतिनिधि मंडल और यरदन के पूर्वी ओर के गोत्रों के बीच भेंट का वर्णन करता है। प्रतिनिधि मंडल ने चेतावनी दी कि इस नई बनाई वेदी ने केवल मिलापवाले तंबू में बलिदान चढ़ाने की परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया था। परंतु यरदन के पूर्वी ओर के गोत्रों के अगुवों ने बड़े जोश के साथ समझाया कि उन्होंने अपनी वेदी बलिदान चढ़ाने के लिए नहीं बनाई थी। बल्कि यह तो अन्य गोत्रों के साथ उनकी एकता का प्रतीक था क्योंकि उन्हें डर था कि अन्य गोत्र राष्ट्र से उन्हें ठुकरा देंगे। इसके प्रत्युत्तर में प्रतिनिधि मंडल प्रसन्न हुआ क्योंकि यरदन के पूर्वी ओर के गोत्र यहोवा के प्रति अविश्वासयोग्य नहीं रहे थे।

खतरे की समाप्ति

युद्ध के खतरे की समाप्ति के साथ पद 32, 33 में विवरण का समाप्ति का कार्य प्रकट होता है। प्रतिनिधि मंडल ने वह सब बताया जो उन्होंने वहाँ अनुभव किया, और यरदन के पश्चिमी ओर के गोत्रों ने परमेश्वर की स्तुति की और तुरंत युद्ध के बारे में बात करना बंद कर दिया।

वेदी का नामकरण

तब कहानी की नाटकीय समस्या का अंतिम समाधान वेदी के नामकरण के साथ पद 34 में पाया जाता है। यरदन के पूर्वी ओर के गोत्रों ने यरदन पर बनी वेदी का नाम “एद” अर्थात् साक्षी रखने के द्वारा अपने इरादों को दर्शाया। और उन्होंने स्पष्ट किया, “यह वेदी हमारे और उनके मध्य में इस बात की साक्षी ठहरी है, कि यहोवा ही परमेश्वर है।” ऐसा करने के द्वारा यरदन के पूर्वी ओर के गोत्रों ने अपने सम्माननीय उद्देश्यों, अर्थात् केवल मिलापवाले तंबू में बलिदान चढ़ाने के इरादों और इस्राएल की राष्ट्रीय एकता के प्रति अपने समर्पण की पुष्टि की।

इस्राएल की राष्ट्रीय एकता के विषय में इस विवरण की मूलभूत संरचना और विषय-वस्तु को मन में रखते हुए, हमें इसके मूल अर्थ पर कुछ टिप्पणियाँ करनी चाहिए।

मूल अर्थ

यह देखना कठिन नहीं है कि क्यों हमारे लेखक ने अपनी पुस्तक के इस विभाजन को अध्याय 22 के विवरण के साथ समाप्त किया। यह कहानी स्पष्ट करती है कि आपसी संघर्ष की बहुत अधिक संभावना के बावजूद भी सब गोत्र कैसे अपनी एकता को बनाए रख सके। यरदन के पश्चिमी ओर के गोत्र यरदन के पूर्वी ओर के गोत्रों को दंड देने की तैयारी करने में सही थे क्योंकि उनका मानना था कि वह कार्य परमेश्वर के विरुद्ध एक बड़ा विद्रोह होगा। परंतु उन्होंने बुद्धिमानी से परिस्थिति को जाँचा और परमेश्वर की आराधना में अपनी राष्ट्रीय एकता में ख़ुशी-ख़ुशी आनंदित हुए। इस्राएल के गोत्रों के बीच जब भी इस तरह के संघर्ष उत्पन्न हुए, इन घटनाओं ने मूल पाठकों के लिए अनुसरण करने के एक मार्ग को तैयार किया।

हम देख सकते हैं कि हमारे लेखक ने राष्ट्रीय एकता के बारे में अपने विवरण की रचना इसलिए की कि वह उन्हीं पाँच विषयों पर ध्यान देने के द्वारा भविष्य की पीढ़ियों का मार्गदर्शन कर सके जिन्हें हमने इस पुस्तक में देखा है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

ईश्वरीय अधिकार

पहला, ईश्वरीय अधिकार का विषय वेदी के निर्माण में दिखाई देता है। पद 22:1 में हम देखते हैं कि यह परमेश्वर के द्वारा अभिषिक्त अगुवा यहोशू था जिसने यरदन के पूर्वी ओर के गोत्रों को अपने आवंटित क्षेत्रों की ओर लौटने को कहा। और यही नहीं, युद्ध के खतरे के उत्पन्न होने की दशा में पद 13 में हम देखते हैं कि ईश्वरीय रूप से अभिषिक्त अधिकारी याजक एलीआज़ार के पुत्र पीनहास ने यरदन के पश्चिमी ओर के गोत्रों के प्रतिनिधि मंडल की अगुवाई की।

हमारे लेखक ने इस कहानी के प्रति पाठकों के दृष्टिकोण को आकार देने के लिए यहोशू और पीनहास की ओर ध्यान आकर्षित किया। उन्हें इसे अतीत की अप्रासंगिक घटनाओं के विवरण के रूप में नहीं देखना था। इसकी अपेक्षा, ईश्वरीय रूप से अभिषिक्त अधिकारियों की सहभागिता ने उन्हें इन घटनाओं को अपने समय में राष्ट्रीय एकता को उचित रीति से बनाए रखने हेतु लागू करने के लिए उत्साहित किया।

परमेश्वर की वाचा

दूसरा, अध्याय 22 में राष्ट्रीय एकता की कहानी परमेश्वर की वाचा का भी उल्लेख करती है। यह विषय विशेषकर यरदन के पश्चिमी ओर के प्रतिनिधि मंडल और यरदन के पूर्वी ओर के गोत्रों के बीच भेंट में सामने आता है। जैसे कि हम पद 25, 27 में पढ़ते हैं, यरदन के पूर्वी क्षेत्र के गोत्र नहीं चाहते थे कि अन्य गोत्र यह कहें, “यहोवा में तुम्हारा कोई भाग नहीं है।” शब्द “भाग” इब्रानी शब्द *खेलेक* (חֵלֶק) का अनुवाद है। और जैसे कि यहोशू 18:7 और 19:9 जैसे अनुच्छेद दर्शाते हैं, हमारे लेखक ने शब्द *खेलेक* (חֵלֶק) को “भाग” या *नाखालाह* (נַחֲלָה) के साथ बहुत निकटता से जोड़ा। जैसा कि हमने इस श्रृंखला में कई बार देखा है, शब्द “भाग” (या मीरास) आम तौर पर अब्राहम या मूसा के साथ परमेश्वर की वाचाओं से जुड़ा हुआ था। अतः यरदन के पूर्वी ओर के गोत्र यह आश्वस्त करना चाहते थे कि यरदन का पश्चिमी भाग उन्हें उनके पूर्वजों से की गई वाचाई प्रतिज्ञाओं के पूर्ण उत्तराधिकारियों के रूप में देखें।

यहोशू की पुस्तक के लेखक ने इन विषयों की ओर इसलिए ध्यान आकर्षित किया ताकि वह राष्ट्रीय एकता की इस बुलाहट को अपने मूल पाठकों पर लागू कर सके। उसने बल दिया कि उसके मूल पाठकों को कभी इस बात की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि इस्राएल के सब गोत्रों — उत्तर, पश्चिम, पूर्व और दक्षिण — के पास प्रतिज्ञा के उस देश में एक भाग था जो इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा में स्थापित था।

मूसा की व्यवस्था का स्तर

तीसरा, इस्राएल की राष्ट्रीय एकता के बारे में हमारे लेखक का विवरण मूसा की व्यवस्था के स्तर को भी प्रकट करता है। पद 22:5 के विवरण के आरंभिक चरण में यहोशू ने यरदन के पूर्वी ओर के गोत्रों को चेतावनी दी, “इस बात की पूरी चौकसी करना कि जो जो आज्ञा और व्यवस्था... मूसा ने तुम को दी है उसको [मानो]।” गोत्रों के बीच हुई भेंट में यरदन के पश्चिमी ओर से आए प्रतिनिधि मंडल ने पद 19 में चेतावनी दी, “हमारे परमेश्वर यहोवा की वेदी को छोड़ और कोई वेदी बनाकर न तो यहोवा से बलवा करो, और न हम से।” ऐसा करना मूसा की व्यवस्था का उल्लंघन करना था। और पद 29 में यरदन के पूर्वी ओर के गोत्रों ने तब मूसा की व्यवस्था की पुष्टि की जब उन्होंने यह कहा “यह हम से दूर रहे कि यहोवा से फिरकर आज उसके पीछे चलना छोड़ दें।”

मूसा की व्यवस्था पर हमारे लेखक के ध्यान ने राष्ट्रीय एकता के अनुसरण के लिए एक महत्वपूर्ण योग्यता को उत्पन्न किया। उसके पाठकों के लिए राष्ट्र की एकता की खोज करना बहुत महत्वपूर्ण था, इसलिए उन्हें मूसा की व्यवस्था के नियमों के अनुरूप ऐसा करना था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य

चौथा, राष्ट्रीय एकता का विवरण परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य की ओर भी ध्यान आकर्षित करता है। यह विषय विशेषकर यरदन के पश्चिमी ओर के क्षेत्र के प्रतिनिधि मंडल और यरदन के पूर्वी ओर के गोत्रों के बीच भेंट में पाया जाता है। पद 17 में प्रतिनिधि मंडल ने यरदन के पूर्वी ओर के गोत्रों को यह याद दिलाते हुए शाप देने की परमेश्वर की सामर्थ्य के बारे में चेतावनी दी कि जब इस्राएल ने पोर में पाप किया तो "यहोवा की मण्डली को भारी दण्ड मिला।" और इसके विपरीत, जब पीनहास ने यरदन के पूर्वी ओर के गोत्रों के स्पष्टीकरण को सुना तो उसने पद 31 में परमेश्वर की अलौकिक आशीष को माना, जहाँ उसने यह कहा, "आज हम ने यह जान लिया कि यहोवा हमारे बीच में है।"

परमेश्वर के अलौकिक शापों और आशीषों के इन उल्लेखों ने मूल पाठकों को याद दिलाया कि उनके समय में राष्ट्रीय एकता की बुलाहट केवल एक मानवीय विषय ही नहीं था। यहोशू के समय के समान उन्होंने भी राष्ट्रीय एकता के लक्ष्य का अनुसरण करने में, या अनुसरण करने में विफल रहने में परमेश्वर के शापों और आशीषों का अनुभव किया।

सारा इस्राएल

पाँचवाँ, यह देखने में हमें हैरानी नहीं होनी चाहिए कि राष्ट्रीय एकता पर आधारित यह विवरण संपूर्ण इस्राएल के विषय को भी दर्शाता है। कहानी के पहले चरण में ही यह प्रकट हो जाता है जब यहोशू ने यरदन के दोनों ओर के इस्राएलियों को पद 3, 7 और 8 में "भाइयों" के रूप में संबोधित किया। पद 17, 20 में भेंट के समय प्रतिनिधि मंडल ने माना कि इस्राएल के कुछ लोगों के पाप इस्राएल की सारी मंडली के विरुद्ध परमेश्वर के क्रोध को भड़का सकते हैं। और पद 34 में संपूर्ण विवरण इस्राएल के विश्वास की एकता की घोषणा के साथ समाप्त होता है जब वेदी का नाम रखा जाता है, "इस बात की साक्षी ... कि यहोवा ही परमेश्वर है।"

यहोशू के लेखक ने स्पष्ट किया कि यहोशू के समय में इस्राएल के गोत्रों के बीच समस्याएँ इस्राएल के गोत्रों की एकता के प्रति गहरे समर्पण के कारण सुलझा ली गईं। और उसने ऐसा अपने समय में अपने मूल पाठकों को भी राष्ट्रीय एकता के समर्पण के समान स्तर पर बुलाने के लिए किया।

हमारे अध्याय में अब तक हमने यह देख लिया है कि कैसे इस्राएल के गोत्र-संबंधी भागों के विषय में हमारे लेखक का विवरण देश की आरंभिक सीमाओं, इस्राएल के गोत्रों के भागों के निश्चित बंटवारे, और गोत्रों के बीच राष्ट्रीय एकता की स्थापना को दर्शाता है। अब हम इस अध्याय के अपने अंतिम विचार-विमर्श की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं।

मसीही अनुप्रयोग

यहोशू की पुस्तक के इस विभाजन के कई छोटे-छोटे विवरणों की रचना मूल पाठकों को व्यावहारिक मार्गदर्शन देने के लिए की गई थी। हमारे लेखक ने संबोधित किया कि उसके पाठकों के लिए उनके उन आरंभिक भागों को सुरक्षित रखना कितना महत्वपूर्ण था जो उनके पूर्वजों ने प्राप्त किए थे। उसने स्पष्ट किया कि कैसे उन्हें उन निश्चित बंटवारे को महत्व देना चाहिए जो परमेश्वर ने प्रत्येक गोत्र को दिया था। और उसने उन्हें इस बात का अनुकरण करने को कहा कि कैसे इस्राएल ने यहोशू के समय में राष्ट्रीय एकता को बनाए रखा। परंतु हम इस्राएल के गोत्र-संबंधी भागों के विषय में इन व्यावहारिक सबकों को स्वयं पर कैसे लागू करें? सरल शब्दों में कहें तो, हमें यह याद रखना चाहिए कि यहोशू के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

समय में जो हुआ वह मसीह में परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर के भाग या उत्तराधिकार की एक बड़ी पूर्णता की ओर केवल एक कदम था।

हम यहोशू की पुस्तक के इस विभाजन के मसीही अनुप्रयोग के विषय में इस संदर्भ में चर्चा करेंगे कि कैसे मसीह अपने राज्य के तीन चरणों में इस्राएल के गोत्र-संबंधी भागों को पूरा करता है : अपने पहले आगमन में इसका उद्घाटन, पूरे कलीसियाई इतिहास में इसकी निरंतरता और अपने दूसरे आगमन में इसकी पूर्णता। आइए पहले हम इस बात पर चर्चा करें कि हमें मसीह के राज्य के उद्घाटन के प्रकाश में इस्राएल के गोत्र-संबंधी भागों को कैसे लागू करना चाहिए।

उद्घाटन

जब मसीह ने अपने पहले आगमन में अपने मसीहारूपी राज्य का उद्घाटन किया, तो इस्राएल प्रतिज्ञा के देश से दूर तितर-बितर होकर रहने में सैंकड़ों वर्ष बिता चुका था। जो वापस अपने देश लौट चुके थे, वे भी अन्यजाति के एक के बाद एक राज्य के अत्याचार को सह रहे थे। परंतु इस्राएल के विश्वासयोग्य लोगों ने कभी यह आशा नहीं छोड़ी कि वे प्रतिज्ञा के देश के अपने भाग को फिर से प्राप्त कर लेंगे। और उन्होंने उस समय की आशा रखी जब उनका भाग मसीहा के राज्य के अधीन इतना बढ़ेगा कि पूरे जगत को समा लेगा।

> इस्राएल को एक देश देने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा अदन की वाटिका के समय की है। परमेश्वर ने अदन की वाटिका में मनुष्यजाति को आज्ञा दी कि वह न केवल वाटिका पर, बल्कि पूरी पृथ्वी पर अधिकार कर ले। और इसलिए भूमि के इस दान में फिर से हम पूरी पृथ्वी पर अधिकार कर लेने, परमेश्वर के राज्य की सीमाओं को फैलाने की प्रतिज्ञा की प्रतिध्वनि को देखते हैं। और हमें इसकी झलक भजन 2 और 72 में दाऊद के राजत्व में मिलनी शुरू होती है — "मुझ से माँग, और मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होने के लिये ... दे दूँगा" — या फिर यशायाह के इस दर्शन में कि इस्राएल की भूमिका सब जातियों के लिए आशीष बनने की थी, जिसमें अब्राहम की वाचा की गूँज सुनाई देती है कि "मैं तुझे आशीष दूँगा, और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।" और इस प्रकार यशायाह 2 में हम पढ़ते हैं कि कैसे जाति जाति के लोग इस्राएल और मसीह, या मसीहा के प्रति उसकी गवाही की ओर धारा के समान बहते हुए आएँगे। अतः जब यीशु आता है तो उसकी सेवकाई में हम यह देखते हैं कि वह इस्राएल को सब जातियों के लिए प्रकाश बनने की उसकी भूमिका में पुनर्स्थापित करता है। और इसलिए मत्ती के सुसमाचार के अंत में वह कहता है, "जाओ और सब जातियों के लोगों को वह सब बताओ जिसकी मैंने तुम्हें आज्ञा दी है; जो कुछ मैंने तुम्हारे लिए किया है उनमें उन्हें चेला बनाओ और मैं तुम्हारे साथ हूँ।" और फिर हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में देखते हैं कि "कैसे तुम मेरे गवाह ठहरोगे," जो फिर से यशायाह 43 की प्रतिध्वनि है। "जाओ, और यह बताओ कि सब जातियों के लिए केवल एक ही उद्धारकर्ता है।" और इसलिए, प्रतिज्ञा का देश पूरी पृथ्वी को और पूरी पृथ्वी पर परमेश्वर के अधिकार को प्रस्तुत करता है।
>
> — डॉ. ग्रेग पैरी

नया नियम स्पष्ट करता है कि यीशु का पहला आगमन इस आशा को पूरा करने की ओर महत्वपूर्ण कदम था। जैसे कि इब्रानियों 1:2 स्पष्ट करता है, परमेश्वर ने यीशु को "सारी वस्तुओं का

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

वारिस" ठहराया। या जैसे कि पौलुस रोमियों 4:13 में कहता है, यीशु "जगत का वारिस" है। और यही नहीं, जैसे कि गलातियों 3:29 जैसे अनुच्छेद हमें बताते हैं, "यदि तुम मसीह के हो तो... प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।" रोमियों 8:17 के शब्दों में, हम "वारिस भी, वरन् परमेश्‍वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं।"

इसी कारण चारों सुसमाचार वर्णन करते हैं कि यीशु ने इस्राएल के गोत्र-संबंधी भागों की सीमाओं के उन पूरे क्षेत्रों में सेवा की जो उन्हें यहोशू के समय में दिए गए थे। उसने और उसके चेलों ने यरदन के पश्चिमी ओर के उत्तरी और दक्षिणी क्षेत्रों में सेवा की। और कई अवसरों पर उन्होंने यरदन के पूर्वी ओर के क्षेत्रों में भी सेवा की। पूरे समय के दौरान, यीशु ने इस्राएल के गोत्रों से स्वयं के लिए ऐसे बचे हुए विश्वासयोग्य लोगों को इकट्ठा किया जो उसके साथ पृथ्वी के वारिस होंगे। और इससे बढ़कर, हांल ही में स्वर्गारोहित मसीह ने यरूशलेम में इस्राएल के गोत्रों के उन प्रतिनिधियों को इकट्ठा किया जिन्होंने "आकाश के नीचे की हर एक जाति में से" उसका अनुसरण करना शुरू कर दिया था, जैसे कि प्रेरितों के काम 2:5 हमें बताता है।

परंतु कुल मिलाकर, इस्राएल के भाग और मसीह के राज्य के उद्‌घाटन के बीच सबसे महत्वपूर्ण संबंध कलीसिया पर पवित्र आत्मा का उंडेला जाना है जो पिंतेकुस्त के दिन शुरू हुआ। इफिसियों 1:14 में प्रेरित पौलुस ने पवित्र आत्मा का उल्लेख ऐसे किया कि वह "हमारी मीरास का बयाना" है। और 2 कुरिन्थियों 1:22 तथा 5:5 में पौलुस ने उसे "बयाना" भी कहा। परंतु यह समझने के लिए कि पौलुस ने पवित्र आत्मा को बयाने — या मसीह में हमारी भावी मीरास की पहली किश्त — के रूप में क्यों देखा, इसके लिए हमें याद करना होगा कि उत्पत्ति 1:2 के अनुसार वह पवित्र आत्मा ही था जिसने आदि में सृष्टि को व्यवस्थित किया। और यशायाह 44:3, 4 जैसी पुराने नियम की भविष्यवानियाँ स्पष्ट करती हैं कि परमेश्वर का आत्मा मसीहा के समय में सृष्टि को नया भी बनाएगा। वास्तव में, मसीह की कलीसिया के लिए पवित्र आत्मा का दान इस नई सृष्टि का पूर्वाभास है। वह हमारी वैश्विक मीरास का भाग है जो हमें मसीह के राज्य के उद्‌घाटन में मिली है जब हम मसीह के पुनरागमन में सब वस्तुओं की पूर्णता की प्रतीक्षा करते हैं।

इसी कारण, यहोशू की पुस्तक के इस हिस्से में प्रकट होनेवाले मुख्य विषय हमें पवित्र आत्मा की अपनी मीरास के पूर्वाभास पर ध्यान देने के अवसर प्रदान करते हैं। जिस प्रकार यहोशू ने प्रतिज्ञा के देश में ईश्वरीय अधिकार के साथ इस्राएल के भाग को वितरित किया, लगभग वैसे ही यीशु और उसके चेलों और भविष्यवक्ताओं ने भी ईश्वरीय अधिकार के साथ पवित्र आत्मा में विश्वासियों के भाग को वितरित किया। जिस प्रकार यहोशू द्वारा क्षेत्रों का वितरण परमेश्वर की वाचा पर आधारित था, वैसे ही परमेश्वर के लोगों के बीच यीशु के द्वारा पवित्र आत्मा का वितरण मसीह में नई वाचा की पूर्णता में था। यहोशू के अधीन इस्राएल का भाग मूसा की व्यवस्था के स्तर के अनुरूप था, और पवित्र आत्मा का वितरण मूसा के समय के बाद परमेश्वर के और अधिक प्रकाशन के संदर्भ में मसीह की मूसा की व्यवस्था के प्रति सिद्ध आज्ञाकारिता का परिणाम था। इस्राएल का भाग परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य पर निर्भर था, और नया नियम यह स्पष्ट करता है कि यीशु के पहले आगमन के दौरान पवित्र आत्मा के वितरण में उससे भी अधिक अलौकिक सामर्थ्य कार्यरत थी। और यहोशू के समय में संपूर्ण इस्राएल को शामिल करने का आदर्श उद्‌घाटन के दौरान और अधिक बढाया गया। न केवल इस्राएल के विश्वासयोग्य बचे हुए लोग, बल्कि अन्यजाति के विश्वासियों ने भी पवित्र आत्मा में मसीह की मीरास के बयाने को प्राप्त किया।

यह देख लेने के बाद कि इस्राएल के गोत्र-संबंधी भागों के मसीही अनुप्रयोग के द्वारा हमें मसीह के राज्य के उद्‌घाटन की ओर मुड़ने की कैसे प्रेरणा मिलती है, अब हमें यह भी देखना चाहिए कि यह संपूर्ण कलीसियाई इतिहास में उसके राज्य की निरंतरता पर कैसे लागू होता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

निरंतरता

यीशु के पहले और दूसरे आगमन के बीच मसीह अपने आत्मा के द्वारा आने वाले जगत के पूर्वाभासों के साथ अपने लोगों को आशीषित करना जारी रखता है। और जैसे यहोशू की पुस्तक ने इस्राएल को प्रतिज्ञा के देश को प्राप्त करने के द्वारा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया, लगभग वैसे ही नया नियम हमें पवित्र आत्मा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। हमें गलातियों 5:16 के अनुसार "आत्मा में चलना" है, और इफिसियों 5:18 के अनुसार "आत्मा से परिपूर्ण" रहना है। इसके अतिरिक्त, जिस प्रकार यहोशू की पुस्तक के मूल पाठकों को प्रत्येक गोत्र के निश्चित बंटवारे को स्वीकार करना था, लगभग वैसे ही मसीह के अनुयायियों को आत्मा में वैसी ही बातों को स्वीकार करना है। जैसे कि 1 कुरिन्थियों 12:4 सिखाता है, "वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है।" यही नहीं, यहोशू के मूल पाठकों को एकता को खोजने के लिए कहा गया था जब वे प्रतिज्ञा के देश के अपने भाग में एक साथ रह रहे थे। और इफिसियों 4:3 में प्रेरित पौलुस ने मसीह के अनुयायियों को "आत्मा की एकता रखने का यत्न [करने]" को कहा।

इस संदर्भ में, हम जब भी यहोशू की पुस्तक के पाँच मुख्य विषयों को देखते हैं, तो हमारे पास यह समझने के अवसर होते हैं कि कैसे हमें दिन-प्रतिदिन मसीह के लिए जीना है। जिस प्रकार यहोशू ने इस्राएल के भाग के पीछे ईश्वरीय अधिकार को माना, उसी प्रकार हमें संसार की वस्तुओं की नहीं बल्कि आत्मा की मीरास को खोजने के द्वारा मसीह में ईश्वरीय अधिकार को मानना है। जिस प्रकार अपने आरंभिक भाग के प्रति इस्राएल का अधिकार परमेश्वर की वाचा पर आधारित था, उसी प्रकार हम भी आश्वस्त हो सकते हैं कि पवित्र आत्मा मसीह में नई वाचा के कारण छुटकारे के दिन के लिए हम पर छाप लगाता है। जिस प्रकार इस्राएल ने अपने आरंभिक भाग को मूसा की व्यवस्था के प्रति समर्पण में प्राप्त किया, उसी प्रकार जब मूसा की व्यवस्था को नए नियम के प्रकाशन के संदर्भ में लागू किया जाता है तो हम पवित्र आत्मा की मीरास में जीवन जीते हैं। जिस प्रकार इस्राएल का भाग परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य के द्वारा प्रदान किया गया था, उसी प्रकार हमारी मीरास को परमेश्वर की सामर्थ्य के द्वारा उंडेला जाता है। और जिस प्रकार संपूर्ण इस्राएल को उनके राष्ट्रीय भाग में हिस्सा मिला था, उसी प्रकार पृथ्वी के हर गोत्र और जाति में से मसीह के अनुयायियों की पवित्र आत्मा की उसी मीरास में सहभागिता है।

इस्राएल के गोत्र-संबंधी भागों का मसीही अनुप्रयोग न केवल उस पर ध्यान देता है जो मसीह ने अपने राज्य के उद्घाटन में, और अपने राज्य की निरंतरता के दौरान हमारी वर्तमान परिस्थितियों में किया, बल्कि यह उस मीरास की हमारी आशाओं को भी बल देता है जो हमें उसके राज्य की पूर्णता के समय होंगी।

पूर्णता

प्रकाशितवाक्य 21:1 के अनुसार आपके और मेरे पास निश्चित आशा है कि जब यीशु का पुनरागमन होगा तो वह "नये आकाश और नयी पृथ्वी" पर राज्य करेगा। पतित सृष्टि आग के द्वारा शुद्ध की जाएगी, बुराई को हटा दिया जाएगा, और परमेश्वर का राज्य पूरी सृष्टि में फ़ैल जाएगा। परंतु यह नई सृष्टि केवल मसीह की ही नहीं होगी। प्रकाशितवाक्य 21:7 में हम देखते हैं उस महान दिन परमेश्वर यह घोषणा करेगा, "जो जय पाए वही इन वस्तुओं का वारिस होगा।" परमेश्वर के लोगों के रूप में नई सृष्टि हमारी अनंत मीरास होगी।

> यहोशू की पुस्तक में राष्ट्रीय भाग का विषय एक महत्वपूर्ण विषय है और आज हम मसीहियों के लिए इनके बहुत से अनुप्रयोग हैं, क्योंकि देश की प्रतिज्ञा यहोशू के दिनों में केवल आंशिक रूप से पूरी हुई थी। अर्थात् जिस देश की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम से की थी वह भौगोलिक रूप से केवल कनान तक सीमित

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> नहीं थी, जैसा कि हम यहोशू की पुस्तक में देखते हैं। हम रोमियों 4:13 में यह पढ़ते हैं : "क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा, न अब्राहम को न उसके वंश को व्यवस्था के द्वारा दी गई थी, परन्तु विश्‍वास की धार्मिकता के द्वारा मिली।" यहाँ पौलुस हमें बताता है कि अब्राहम जगत को प्राप्त करेगा — पूरे जगत को! ... ये सारी प्रतिज्ञाएँ अन्यजातियों के लिए भी पूरी हुईं, जो शारीरिक रूप से अब्राहम की संतान नहीं हैं, परंतु वे उस मसीह में विश्वास के द्वारा इन प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करते हैं, जो स्वयं अब्राहम की संतान है। अतः जो अब्राहम ने प्राप्त किया और जो यहोशू के समय में इस्राएल ने प्राप्त किया वह उस बड़े, विशाल तथा अधिक जटिल देश का छोटा सा हिस्सा था जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी, और जिसे वह मसीह के दूसरे आगमन में पूरी तरह से पूर्ण करेगा। अंततः जब मसीह वापस आएगा तो वह न केवल कनान पर राज्य करेगा, बल्कि वह संपूर्ण पृथ्वी — नई पृथ्वी और नए आकाश — पर राज्य करेगा और उसे प्राप्त कर लेगा, और हम मसीह के साथ सदा तक राज्य करेंगे।
>
> — रेव्ह. शेरिफ गेंडी, अनुवाद

इस कारण, यहोशू की पुस्तक के इस विभाजन के पाँच मुख्य विषय हमारी दृष्टि को उस आशा पर लगा देते हैं जो हमारे पास मसीह के राज्य की पूर्णता में है। जैसे ईश्वरीय अधिकार उस कार्य को सुदृढ़ किया जो यहोशू ने अपने समय में किया था, वैसे ही जब यीशु महिमा में वापस आएगा तो वह परमेश्वर के कार्य को सिद्ध और पूर्ण रूप से पूरा करेगा। जिस प्रकार इस्राएल का भाग परमेश्वर की वाचा के द्वारा प्राप्त कर लिया गया, उसी प्रकार हमारी अंतिम मीरास मसीह में नई वाचा के द्वारा प्राप्त कर ली जाती है। जिस प्रकार यहोशू ने मूसा की व्यवस्था के स्तर के अनुरूप इस्राएल के भाग को वितरित किया, उसी प्रकार मसीह का प्रत्येक अनुयायी मसीह के स्वरूप के सदृश्य बन जाएगा और आने वाले जगत में संपूर्ण ईश्वरीय प्रकाशन के स्तर को पूरा करेगा। जिस प्रकार इस्राएल ने अपने भाग को परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य के द्वारा प्राप्त किया, उसी प्रकार परमेश्वर भी मसीह के पुनरागमन के समय अपनी सामर्थ्य को ऐसे प्रकट करेगा जैसे पहले कभी नहीं की। और जिस प्रकार इस्राएल के भाग में सारा इस्राएल शामिल था, उसी प्रकार मसीह में पाया जानेवाला प्रत्येक व्यक्ति आने वाले जगत में अपनी अनंत मीरास को प्राप्त करेगा।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने यहोशू की पुस्तक के दूसरे मुख्य विभाजन में इस्राएल के गोत्रों को दिए जानेवाले उनके भागों का अध्ययन किया है। हमने देखा है कि कैसे हमारे लेखक ने यरदन की पश्चिमी और पूर्वी दोनों दिशाओं में इस्राएल के क्षेत्रों का वर्णन करने के द्वारा इस्राएल के भाग की आरंभिक सीमाओं को प्राथमिकता दी। हमने यहोशू के समय में यरदन की पूर्वी और पश्चिमी दोनों दिशाओं में वितरित निश्चित गोत्र-संबंधी बंटवारों पर भी ध्यान दिया है। और हमने देखा है कि हमारे लेखक ने इसका वर्णन करने के द्वारा इस्राएल के सब गोत्रों के बीच राष्ट्रीय एकता को भी बढ़ावा दिया कि कैसे इस्राएल यहोशू के समय में एकता में बंधा रहा। अंततः हमने मसीह के राज्य के उद्घाटन, उसकी निरंतरता और उसकी पूर्णता के प्रकाश में यहोशू की पुस्तक के इस विभाजन के मसीही अनुप्रयोग को भी देखा है।

यहोशू की पुस्तक के लेखक ने अपने पाठकों के मन में यह डाला कि उनके लिए उसकी पुष्टि करना कितना महत्वपूर्ण था जो परमेश्वर ने यहोशू की अगुवाई में पूरा किया था। और आज मसीह के

अनुयायियों के रूप में हमें भी ऐसा ही करना आवश्यक है। हम जानते हैं कि यीशु ने हमारी अनंत मीरास पहले से ही सुरक्षित कर रखी है। दिन-प्रतिदिन हम पवित्र आत्मा में इस मीरास के पूर्वाभास में जीवन बिताते हैं। और हम उस दिन की बाट जोह रहे हैं जब मसीह का महिमा में पुनरागमन होगा। उस दिन वह सब वस्तुओं के वारिस के रूप में अपना अधिकारपूर्ण पद प्राप्त करेगा और वह उन सबको नई सृष्टि की महान मीरास प्रदान करेगा जिन्होंने अनंतता के लिए उस पर भरोसा रखा है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.